THEORIE'S OF EMOTION :-

JAMES LANGE जेम्स-लांजे सिद्धांत →

इस सिद्धांत का प्रतिपादन दो वैज्ञानिकों यानि विलियम जेम्स जो एक अमेरीकन थे तथा कार्ल लान्जे जो डेनिस के थे, इन दोनो के संयुक्त प्रभाव से इस सिद्धांत का प्रतिपादन हुआ इस कारण इन दोनो के नाम को मिलाकर ही इसका नाम रखा गया, जेम्स लांजे सिद्धांत जो संवेग का एक जैविक सिद्धांत है।

इस सिद्धांत की व्याख्या समान्य बोध के ठीक विपरित होता है। जैसे- हमने कोई सांवेगिक उद्दीपक जैसे बाघ या भालू देखते है तो डर जाते है इस लिए भागने लगते है इसका मतलब सांवेगिक अनुभूति होता है (डर) और सांवेगिक व्यहार (भागना)। दुसरे शब्दो में डर की अनुभूति पहले होती है और भागने कि प्रक्रिया बाद मे शुरू होती है। परंतु जेम्स लांजे का सिद्धांत ऐसा नहीं होता इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति बाघ या भालू देखता है और भाग जाता है इसलिए डर जाता है। हम दुश्मन को देखते है और उसकी ओर मुँह फेर लेते है इसलिए घृणा हो जाता है। इन उदाहरणो से स्पष्ट है कि जेम्स लांजे सिद्धांत के अनुसार पहले संवेगात्मक व्यहार होता है और तब संवेगात्मक अनुभूति होती है। यदि संवेगात्मक व्यहार नहीं होगा तो संवेगात्मक अनुभूति भी नही होगी दुसरे शब्दो में 'यदि व्यक्ति बाघ या भालू को देखकर नही भागता तो उसमे डर की अनुभूति नही होती है।

उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि जेम्स लांजे सिद्धांत संवेग कि व्याख्या निम्नांकित तीन चरणो मे करता है-

(1.) सबसे पहले व्यक्ति किसी उद्दीपक जो संवेग उत्पन्न करता है उसका प्रत्यक्षण करता है दुसरे शब्दो में संवेग की प्रक्रिया प्रत्यक्षण पर निर्भर करती है। जब किसी उद्दीपक

द्वारा ग्राहक यानि ज्ञानेन्द्रिय: (Sence Organ) या ग्राहक (Receptor) में तंत्रिका आवेग (Nerve impulse) उत्पन्न होता है तो वह पथ (संख्या-1) होता हुआ मस्तिष्क में पहुंचता है जिसमें व्यक्ति को उद्दीपक का प्रत्यक्षण होता है, जैसे - यहाँ व्यक्ति भालू या बाघ को अपने सामने होने का प्रत्यक्षण करता है।

(ii). किसी उद्दीपक का प्रत्यक्षण होने से शरीर के भीतरी अंगो एवं बाह्य अंगो में परिवर्तन हो जाता है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति संवेगात्मक व्यवहार करता है। इसमें तंत्रिका आवेग मस्तिष्क से निकलकर शरीर के अन्तरावयव (Visceral organs) तथा भीतरी अंगो जैसे- हृदय फेफड़ा, एड्रिनल ग्रन्थि, वृक्क, आदी उत्तेजित करता है तब साथ ही साथ शरीर के बाहरी अंगो यानि हाथ पैर की मांसपेशियो को क्रियाशील कर देता है, जैसे - बाघ या भालू देखने के बाद व्यक्ति के हृदय कि गति तीव्र हो जाती है, साँस तेज चलने लगती है तथा एड्रिनल ग्रन्थि से एड्रिनालिन निकलकर खून में मिलना प्रारंभ हो जाता है आदी, आदी। इन सबका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति में तीव्र शारीरिक परिवर्तन होता है। फलत: वह बाघ या भालू देखकर भाग जाता है यानि संवेगात्मक व्यवहार करता है।

(iii) संवेगात्मक व्यवहार के बाद मस्तिष्क को यह सूचना मिलती है कि अमुक व्यवहार किया गया है। शरीर के भीतरी अंगो से तथा शरीर के बाहरी अंगो से मस्तिष्क को अमुक संवेगिक व्यवहार से संबंधित परिवर्तन की सूचना मिलती है। इस तरह से इस व्याख्या में दो बाते स्पष्ट हो जाती है - पहला यह की संवेगात्मक व्यवहार पहले होता है तथा संवेगात्मक अनुभूति बाद में। दूसरी यह की संवेगात्मक अनुभूति का होना संवेगात्मक व्यवहार पर निर्भर करता है। यदि संवेगात्मक व्यवहार नही होगा तो संवेगात्मक अनुभूति भी नही होगी। बाघ या भालू को देखकर हम भाग जाते है (संवेगात्मक व्यवहार है) इसे भागने की सूचना मस्तिष्क को मिलती है। इसके फलस्वरूप हम में संवेगात्मक अनुभूति होती है अर्थात, हम डर जाते है।

मनोवैज्ञानिकों ने जेम्स लांजे के सिद्धांत की कुछ आलोचनाएँ भी की हैं जो इस प्रकार हैं :-

1. इस सिद्धांत के अनुसार संवेगात्मक अनुभूति, संवेगात्मक व्यवहार पर निर्भर है, परंतु सच्चाई ऐसी नहीं है। करीब-करीब सभी संवेग में एक ही तरह की संवेगात्मक व्यवहार आदी देखने को मिलती है यदि सचमुच में संवेगात्मक अनुभूति संवेगात्मक व्यवहार पर निर्भर है तो वैसी परिस्थिति में व्यक्ति को हमेशा एक ही संवेगात्मक अनुभूति होती है क्योंकि करीब-करीब एक ही तरह का संवेगात्मक व्यवहार विशेषकर आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन सभी संवेग में हुआ करता है।

2. इस सिद्धांत के अनुसार संवेगात्मक अनुभूति शारीरिक परिवर्तन पर निर्भर करती है, यदि संवेगात्मक अनुभूति सचमुच में शारीरिक परिवर्तन पर निर्भर करती है तो जब-जब शारीरिक परिवर्तन में उत्पन्न होता है तब तब इससे संवेग की अनुभूति होनी है। परंतु प्रयोगात्मक अध्ययनों से यह साबित हो गया है कि ऐसा नहीं होता है।

3. प्रयोगात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हो गया है कि शरीर के भीतरी अंग अधिक संवेदनशील नहीं होते हैं क्योंकि उनमें तंत्रिका की संख्या कम होती है तथा ये चिकनी पेशियों से बने होते हैं, इसका परिणाम यह होता है कि इनमें आंतरिक परिवर्तन होने में कुछ समय लगता है सच्चाई यह है कि व्यक्ति को संवेगात्मक अनुभव इन अंगों में परिवर्तन होने से पहले हो जाता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है, कि शारीरिक परिवर्तन या सांवेगिक व्यवहार पर ही संवेगात्मक अनुभूति निर्भर नहीं है। अतः जेम्स लांजे का सिद्धांत मात्र एक सिद्धान्त एवं पक्षीय प्राक्कल्पना है।